॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥

॥ श्रीमद् आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि जन्म शताब्दी वर्ष 1923 - 2023

घर घर पाठशाला

3-7 साल के बालक-बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति

श्रुतभास्कर जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरधंर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा

गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता

प.पू प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा की सुशिष्या

साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा आदि ठाणा-6

आयोजक - भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल, लुधियाना

संचालन समिति - श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मंदिर, किचलू नगर, लुधियाना

निवेदक- श्री आत्मानंद जैन सभा (रजि.), लुधियाना

गुरु स्तुति

भवोदधि–तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ– श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ।।

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ।।

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरूराय, मुक्ति–सोपान आरोहे ।।

क्षत्रियकुल–प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ।।

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर–थर कांपी ।।

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा–धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी।।

नवपद जी

तत्व त्रयी

देव	गुरु	धर्म
अरिहंत सिद्ध	आचार्य उपाध्याय साधु	दर्शन ,ज्ञान चरित्र,तप

कर्म

कर्म तो अनन्त है किन्तु उनकी मूल प्रकृतियाँ आठ हैं।

1. ज्ञानावरणीय
2. दर्शनावरणीय
3. वेदनीय
4. मोहनीय
5. आयुष्य
6. नाम
7. गोत्र
8. अन्तराय

नव अंग पूजा के दोहे

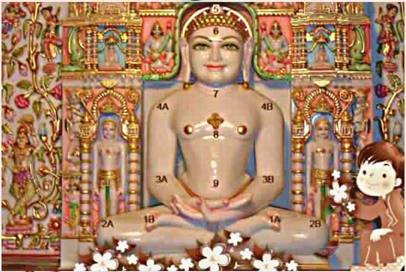

1. चरण :

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भवजल अंत ॥ 1 ॥

जब भगवान के अभिषेक के लिए युगलिक पत्तों में पानी लेकर आए तब तक इन्द्र महाराजा ने भक्तिपूर्वक प्रभु को वस्त्रों और गहनों से सजा दिया। इसलिए युगलिकों ने प्रभु के अंगूठे पर जल से पूजा की। हे प्रभु मैं भी जल पूजा द्वारा अपने भवजल (भव भ्रमण) का अंत चाहता हूँ।

---

2. जानु :

जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश
खड़ा-खड़ा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ 2 ॥

हे प्रभु, आपने अपने घुटनों (जानु) के बल पर काउस्सग्ग किया और विहार किया। खडे-खडे आपने केवल ज्ञान भी प्राप्त किया। आपकी इस जानु पूजा के प्रभाव से मेरे जानु में भी वह ताकत प्रगट हो।

3.हाथ के कांडे :

लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरषीदान ।
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवी बहुमान ॥ 3 ॥

प्रभु आपके समान मैं भी दोनों हाथो से वरषीदान देकर दीक्षा लेकर अपना कल्याण करुं।

---

4. खंभे (कंधा) :

मान गयुं दोय अंश थी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजा बले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ 4 ॥

हे प्रभु आप इन कंधो (खंभे) के बल से भव सागर से तिर गए। आपकी इस पूजा से मेरा भी अहंकार चला जाए और मोक्ष जाने की ताकत मेरी भुजाओं को मिले।

अष्टप्रकारी पूजा के नाम

जल पूजा

दीपक पूजा

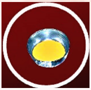 चंदन पूजा

अक्षत पूजा

पुष्प पूजा

नैवेद्य पूजा

धूप पूजा

फल पूजा

गति कितनी उनके नाम

इरियावहियं सूत्र

1. इरियावहियं सूत्र

(IRIYAVAHIYAM SOOTRA)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
ICHCHHAKARENA SANDISAHA BHAGAVAN !

इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं !
IRIYAVAHIYAM PADIKKAMAMI ? ICHCHHAM !

इच्छामि पडिक्कमिउं !
ICHCHHAMI PADIKKAMIUM !

इरियावहियाए विराहणाए !
IRIYAVAHIYAE VIRAHANAE !

गमणागमणे !
GAMANAGAMANE !

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे
PANAKKAMANE, BEEYAKKAMANE, HARIYAKKAMANE,

ओसा–उत्तिंग पणग–दगमट्टी–
OSA- UTTINGA-PANAGA-DAGA MATTEE-

मक्कडा संताणा संकमणे !
MAKKADA SANTANA SANKAMANE !

जे मे जीवा विराहिया ।
JE ME JEEVA VIRAHIYA |

एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया !
EGINDIYA, BEINDIYA, TEINDIYA, CHAURINDIYA, PANCHINDIYA !

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
ABHIHAYA, VATTIYA, LESIYA, SANGHAIYA, SANGHATTIYA,

परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
PARIYAVIYA, KILAMIYA, UDDAVIYA,

ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,
THANAO, THANAM, SANKAMIYA, JEEVIYAO VAVAROVIYA,

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥
TASSA MICHCHHAMI DUKKADAM ॥

भावार्थ: इस सूत्र में चलते–फिरते, आते–जाते अपने द्वारा जीव–हिंसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिए पूर्व क्रिया रुप मिच्छामि दुक्कडं दिया जाता है।

EXPLANATION: Whatever sins are incurred or commited in going and coming are removed by this sootra.

इरियावहियं
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
इरियावहियं पडिक्कमामि ?
इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं
इरियावहियाए
विराहणाए
गमणागमणे
पाणक्कमणे
बीयक्कमणे
हरियक्कमणे
ओसा-उत्तिंग
पणग-दगमट्टी
मक्कडा-संताणा
संकमणे
जे मे जीवा विराहिया
एगिंदिया
बेइंदिया
तेइंदिया
चउरिंदिया
पंचिंदिया
अभिहया
वत्तिया
लेसिया
संघाइया
संघट्टिया
परियाविया
किलामिया
उद्दविया
ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ ववरोविया
तस्स मिच्छामि दुक्कडं

नवपद जी के नाम, गुण, वर्ण

देव तत्त्व

1	अरिहंत	सफेद	12
2	सिद्ध	लाल	8

गुरू तत्त्व

3	आचार्य	पीला	36
4	उपाध्याय	हरा	25
5	साधु	काला	27
पंच परमेष्ठि के गुण			108

धर्म तत्त्व

6	दर्शन	सफेद	67
7	ज्ञान	सफेद	51
8	चारित्र	सफेद	70
9	तप	सफेद	12
नवपद के गुण			308

जैन बालक की पहचान

बाल-संस्कार गीत

ये बातें कभी न भूले

ये बातें कभी न भूले (2)
जय अरिहंत, जय अरिहंत (2)

सुबह सवेरे जल्दी उठे, माता-पिता को नमन करें,
प्रभु के दर्शन, पूजन करें, ये बातें कभी न भूले ॥

रात्रि भोजन कभी न करें, आलू-कांदा कभी न खाये।
द्विदल-अभक्ष्य कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले॥

बैठे-बैठे खाये वे मानव कहलाये, खडे-खडे खाये वे दानव कहलाये।
जैसे-तैसे कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले।

टी.वी. विडियों कभी न देखे, अपशब्द कभी न बोले,
झूठ-चोरी कभी न करें, ये बातें कभी न भूले।

भाई-बहन कभी न लड़े, बडो के सामने कभी न बोले,
जीवन भर ये याद रखें, ये बातें कभी न भूले॥

बड़े होकर वज्रस्वामी बने, साधु नहीं तो श्रावक बने,
कुमारपाल जैसे धर्मी बनें, ये बातें कभी न भूले।

श्री वल्लभ गुरु के चरणों में

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में,
मैं नित उठ शीश नमाता हूँ
मेरे मन की. कली खिल जाती है,
जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ ॥1॥
मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है,
इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है,
जो चाहता हूँ सो पाता हूँ ॥2॥
जब याद तेरे गुण आते हैं,
दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बन कर मस्त दीवाना फिर,
बस गीत तेरे ही गाता हूँ ॥3॥
गुरूराज तपस्वी महामुनि,
सिरताज हो तुम महाराजों के।
मैं इक छोटा सा सेवक हूँ,
कुछ कहता हुआ शरमाता हूँ ॥4॥
गुरू चरणों में हे अर्ज यही,
बढ़ती दिन-रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे,
यही भक्ति का फल चाहता हूँ ॥5॥